साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव पर "भारत छोड़ो आंदोलन" विषयक दो दिवसीय सम्मिलन का शुभारंभ

भारत का इतिहास सतत संघर्ष का इतिहास रहा है - बल्देव भाई शर्मा

मुंबई, 08 अगस्त 2021, साहित्य अकादेमी की ओर से आज़ादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर आज दरबार हॉल, एशियटिक सोसायटी, मुंबई में "साहित्य और भारत छोड़ो आंदोलन" विषयक द्वि-द्विवसीय सम्मिलन का शुभारंभ हुआ। सम्मिलन के प्रथम दिवस उदघाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत वक्तव्य में भारत छोड़ो आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और भारतीय भाषाओं के साहित्यिक योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि स्वाधीनता आंदोलन के समय में प्रकाशित समाचार पत्र और पुस्तकों ने भारतीय जनमानस को गहरे तक प्रभावित किया।

उदघाटन सत्र के अतिथि वक्ता कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति एवं सुप्रिसिद्ध साहित्यकार बल्देव भाई शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि यह गर्व एवं आनंद का विषय है कि साहित्य अकादेमी द्वारा आज़ादी का अमृत महोत्सव ऐसे स्थान पर मनाया जा रहा है जो स्थान स्वतंत्रता आंदोलन का साक्षी रहा है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता हमें बातों से नहीं मिली, उसके लिए पीढ़ियों ने संघर्ष किया है। भारत का इतिहास गुलामी का इतिहास नहीं है, भारत का इतिहास सतत संघर्ष का इतिहास रहा है। उस दौर में साहित्यकारों एवं पत्रकारों ने एक-एक शब्द को अग्नि बनाकर सृजित किया है। उसी साहित्य ने भारतीय जनमानस में स्वाधीनता की चेतना का संचार किया। आज हमें हमारी आत्मिक चेतना को नयी पीढ़ी को संचारित करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर ओड़िया के सुप्रसिद्ध साहित्यकार गौरहरि दास ने अपने अतिथि वक्तव्य में भारत छोड़ो आंदोलन में ओड़िया भाषा-साहित्य समाज के योगदान को रेखांकित किया। उदघाटन वक्तव्य में गुजराती के सुप्रसिद्ध साहित्यकार, विद्वान सितांशु यशश्चंद्र ने साहित्य की तीन विधाओं उपन्यास, जीवनी एवं कविता और भारत छोड़ो आंदोलन को केंद्र में रखा। उन्होंने तत्कालीन समय और साहित्य को भी प्रमुखता से रेखांकित किया।

उदघाटन वक्तव्य का वाचन साहित्य अकादेमी के उपसचिव कृष्णा किंबहुने ने किया।

देशभक्तिपूर्ण गद्य एवं पद्य पाठ सत्र की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध मराठी लेखक, उपन्यासकार विश्वास पाटील ने की। इस अवसर पर पाटील ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के जीवन पर आधारित अपने प्रसिद्ध मराठी उपन्यास महानायक के अंग्रेज़ी अनुवाद का पाठ किया।

देशभक्तिपूर्ण गद्य एवं पद्य पाठ सत्र में हिंदी, उर्दू और मराठी के साहित्यकार एवं कवियों ने देशभक्ति पूर्ण गद्य एवं पद्य का भी पाठ किया। उषा ठक्कर ने "गांधीजी के साहित्य", शमीम तारिक ने "भारत छोड़ो आंदोलन एवं मौलान अब्दुल कलाम आज़ाद", और बी. रंगराव ने स्वाधीनता आंदोलन में बाबा साहेब अंबेडकर के योगदान को रेखांकित करते हुए अपने आलेख का सविस्तार पाठ किया। इस अवसर पर मराठी कवि-लेखक रवि लाखे, गिरीश पतके ने हिंदी एवं मराठी की प्रसिद्ध देशभक्तिपूर्ण कविताओं का पाठ भी किया।

द्वि-द्विवसीय सम्मिलन के प्रथम सत्र में हिंदी के सुपरिचित लेखक आलोचक श्योराज सिंह बेचैन ने "आदिवासी, दलित तथा भारत छोड़ो आंदोलन" और गांधीवादी विचारक एवं पत्रकार कुमार प्रशांत ने "पत्रकारिता तथा भारत छोड़ो आंदोलन" विषयक आलेखों का पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध मराठी चिंतक भालचन्द्र मुणगेकर ने की। कार्यक्रम का संयोजन साहित्य अकादेमी के उपसचिव कृष्णा किंबहुने ने किया।

के. श्रीनिवासराव